चंचला लक्ष्मी

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

लक्ष्मी, धन, सम्पदा, ऐश्वर्य और भौतिक सम्पदाओं को देने वाली हैं। धन की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी कहलाती है। लक्ष्मी चंचला कहलाती हैं, क्योंकि यह एक स्थान पर अधिक दिनों तक नहीं रुकती। लक्ष्मी का आसन कमल है। कमल में रेशे होते हैं। रेशे लक्ष्मी के पैरों में गड़ न जायें इसलिए लक्ष्मी कहीं पर अपने पैर को जमाकर के नहीं रखती। लक्ष्मी को संरक्षित रखने के लिए बहुत उपाय की जरूरत होती है। सभी के पास लक्ष्मी टीक भी नहीं पाती। पूर्व जन्मों के अच्छे कर्म के कारण ही कोई व्यक्ति धन सम्पदा को प्राप्त करता है। धन सम्पदा के प्राप्त हो जाने पर मनुष्य में विनम्रता होनी चाहिए। प्रायः देखा यह जाता है कि लक्ष्मी सम्पन्न व्यक्ति अहंकारी हो जाता है।

जिसके पास धन सम्पदा अधिक होती है वह अपने सगे सम्बन्धियों और अपने परिचितों को नजर अंदाज कर जाता है। धीरे–धीरे समाज से उसका सम्बन्ध टूटने लगता है। लक्ष्मी के प्राप्त होने के ये सब दोष हैं। लक्ष्मी स्वयं कहती है कि मैं नमक के समान हूं जैसे भोजन में अधिक नमक हो जाने पर भोजन त्याज्य हो जाता है वही बात लक्ष्मी के साथ हुई है। अधिक लक्ष्मी प्राप्त हो जाने से मनुष्य सबको छोड़ देता है। लक्ष्मी को जीवनभर लोग इकट्ठा करते हैं किन्तु जाते समय सम्पूर्ण धन सम्पदा धरी की धरी रह जाती है कोई इसे साथ लेकर के नहीं जा पाता। मानव की सबसे प्रिय वस्तु धन सम्पदा ही है। लक्ष्मी ईश्वर के तुल्य नहीं है लेकिन मनुष्य ईश्वर से कम इसको नहीं मानता। लक्ष्मी को कोई उपर नहीं ले जा सकता किन्तु लक्ष्मी मनुष्य को बहुत ऊंचा बना देती है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह उतना ही धन इकट्ठा करे जिससे परिवार का भरण–पोषण हो जाये। कबीरदासजी ने कहा है–

साईं इतना दीजिए, जामैं कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूं, साधु न भूखा जाय।।

अर्थात् हे प्रभु उतना दीजिए जिससे परिवार का भरण–पोषण हो जाये। मैं भी भूखा ना रहूं और मेरे द्वार पर आने वाला व्यक्ति भी द्वार से भूखा ना जाये। धन के कारण ही नये–नये रिश्ते बनते हैं और पुराने रिश्ते बिगड़ते चले जाते हैं। यद्यपि धन को लोग हाथ की मैल कहते हैं किन्तु जिसके पास धन नहीं रहता लोग उसकी कितना इज्जत करते हैं। धन सम्पदा ही सारे फसाद की जड़ है। चोर धन को चुराने की ताक में रहता है। पारिवारिकजन धन का विभाजन करने की चिन्ता में रहते हैं। धन के कारण ही मानव–मानव में वैर हो जाता है।

आजकल जिसके पास धन नहीं है समाज में उसकी अधिक इज्जत नहीं होती। प्राचीनकाल में ज्ञान को महत्व दिया जाता था। किन्तु आजकल ज्ञान का स्थान धन ले लिया है। बिना धन के मनुष्य की समाज में इज्जत नहीं होती। अयोग्य होने के बाद भी आप धन सम्पन्न हैं तो समाज में आपका सम्मान होगा। धन सम्पदा ही मूल्यांकन का एक आधार रह गया है। इसलिए आजकल लोग ज्ञान को महत्व न देकर येन केन प्रकारेण धन इकट्ठा करने में लगे रहते हैं।

समाज का हर व्यक्ति प्रतिष्ठा प्रिय होता है। प्रतिष्ठा का अर्थ है सम्मान, मान–मर्यादा की प्राप्ति। प्रतिष्ठा कब मिलती है? जब व्यक्ति अच्छा कार्य करता है, समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए कार्य करता है तब समाज में वह प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। सामाजिक कार्य के साथ अपनी प्रतिष्ठा को जोड़ो तो अच्छा है। मनुष्य के लिए स्वार्थ से अच्छा परार्थ और परार्थ से अच्छा परमार्थ है। आत्मकेन्द्रित होने से मानव को समाज में प्रतिष्ठा नहीं मिलती। जब परोपकार या समाजहित के लिए कार्य किया जाता है तो मनुष्य का मूल्यांकन समाज करता है। प्रतिष्ठा स्वयं नहीं प्राप्त होती। बल्कि प्रतिष्ठा समाज द्वारा दी जाती है। प्रतिष्ठा अच्छी चीज है किन्तु प्रतिष्ठा का व्यामोह बुरी चीज है।

प्रतिष्ठा से इज्जत बढ़ती है। प्रतिष्ठा व्यक्ति के कार्य का प्रोत्साहन है। जो समाज और राष्ट्र के लिए अच्छे कार्य करते हैं उन्हें सम्मान देने के लिए भारत सरकार भी भारत के सबसे बड़े पुरस्कार भारत रत्न से सम्मानित करती है। भारत सरकार के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को अनेक पुरस्कार दिये जाते हैं। ये सम्मान व्यक्तियों के कार्यों के आधार

पर उनके मूल्यांकन के पश्चात् दिया जाता है। कोई स्वयं यह पुरस्कार नहीं प्राप्त करता, बल्कि यह पुरस्कार प्रोत्साहन के लिए दिया जाता है।

भारत में जितने भी भारत रत्न प्राप्त कर्त्ता हैं उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करके देश को ऊँचाई पर पहुँचाया है। लोककल्याण के लिए जो कार्य करते हैं उनका मूल्यांकन स्वयं हो जाता है। भगवान बुद्ध और भगवान महावीर में प्रतिष्ठा का व्यामोह नहीं था। ये दोनों राजपुत्र थे। अपने राजपाट को छोड़कर, लक्ष्मी का त्यागकर सन्यस्त जीवन जीने के लिए सब कुछ छोड़ दिया। उन्होंने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह जैसे सिद्धान्तों का उपदेश देकर जनता को सन्मार्ग प्रदान किया।